देश की लोकप्रिय मासिक हिन्दी खेल पत्रिका
शानदार 30वां वर्ष

नेशनल स्पोर्ट्स टाइम्स

अप्रैल-2024
न्यूज़ मैग्जीन
मूल्य ₹25

17वें आईपीएल का रोमांच चरम पर

रिकार्डतोड़ मैच में हेड, अभिषेक व क्लासेन का धमाका

आईपीएल 2024 का पूरा कार्यक्रम

स्मृति की कप्तानी में रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर बनी पहली बार WPL चैंपियन

विशेष रिपोर्ट

टीम इंडिया के लिए ऋषभ पंत की वापसी का इंतजार

हैं जो किसी भी प्रेरणा देने वाली स्टोरी से कम न होगी

Website: www.nationalsportstimes.org स्पोर्ट्स वेब पोर्टल

आरएनआई नंबरः 69917/94 डाक पंजीयन म.प्र. / भोपाल / 607 /2024-26 /1 तारीख को प्रकाशित / डाक पोस्टिंग 5 तारीख

Email: nationalsportstimes@yahoo.com, nationalsportstimes@gmail.com

पंजीयन संख्या (आरएनआई): 69917/94, डाक पंजी. न. मप्र/भोपाल/607/2024-26

■ वर्ष-30 ■ अंक-10 ■ क्रमांक-281 ■ अप्रैल-2024 ■ मूल्य-25 रूपये

संपादकीय मंडल

प्रधान संपादक	:	इन्द्रजीत मौर्य
कार्यकारी संपादक	:	सुरेश कुमार
प्रबंधक	:	निखिल कुमार
विज्ञापन प्रबंधक	:	अजय मौर्य
विज्ञापन सहायक	:	रामेश्वर भार्गव
डिजाइनिंग	:	सुरेन्द्र डहारे
छायाकार	:	निर्मल व्यास
कार्टूनिस्ट	:	वीरेंद्र कुमार ओगले

सलाहकार संपादक

- अरुणेश्वर सिंहदेव
- समीर मिरीकर
- अरुण भगोलीवाल
- सुशील सिंह ठाकुर
- आशीष पाण्डे
- राजीव सक्सेना
- शांति कुमार जैन
- शंकर मूर्ति

विशेष संवाददाता / समीक्षक

अरुण अर्णव, अनिल वर्मा, हरेंद्र नागेश साहू, हरीश हर्ष, चरनपालसिंह सोबती, वीरेन्द्र शुक्ल, सरिता अरगरे, मोहन द्विवेदी, मो. ईशाउद्दीन, धर्मेश यशलाहा, दामोदर आर्य, डॉ. मुनीष राणा, प्रशांत सेंगर, सुदेश सांगते, डॉ. प्रशांत मिश्रा, विजय रांगणेकर, संजय बेनर्जी, अमरनाथ, मो. अफरोज।

संपादकीय कार्यालय

बी-10, छत्रपति नगर, अयोध्या बायपास, भोपाल
फोन : 0755-4218892,
मोबाइल: 094250-25727, 8349994166

पंजीयन कार्यालय : ई-197, ओल्ड मीनाल रेसीडेंसी, जे.के. रोड, भोपाल, मप्र-462023,

E-Mail: nationalsportstimes@Yahoo.com
nationalsportstimes@gmail.com

फोटो स्रोतः इंटरनेट, सोशल मीडिया, अखबार एवं ब्यूरो कार्यालय

ब्यूरो कार्यालय

इंदौर, उज्जैन, नागदा, देवास, सीहोर, विदिशा, रायसेन, बुरहानपुर, धार, जबलपुर, ग्वालियर, दतिया, रीवा, सतना, खण्डवा, खरगोन, शहडोल, छिंदवाड़ा, सागर, छतरपुर, होशंगाबाद, बैतूल, इटारसी, रतलाम, शिवपुरी, ललितपुर, झाँसी, नागपुर, रायपुर, दुर्ग, बिलासपुर, मुंबई, रत्नागिरी, कोलहापुर, पूना, जलगाँव, दिल्ली, नोएडा, हरियाणा, लुधियाना, जालंधर, मेरठ, लखनऊ, कानपुर, इलाहाबाद, गोरखपुर, मिर्जापुर, जयपुर, पटना, नैनीताल, देहरादून, कुमाऊ, गाजियाबाद, एंगुल (उड़ीसा), ऊना, शिमला, भुवनेश्वर।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक इन्द्रजीत मौर्य द्वारा सुलेख आफसेट प्लाट नं. 150, एल-5, मनोरमा काम्प्लेक्स, जोन-1, एमपी नगर, भोपाल से मुद्रित तथा ई-197, मीनाल रेसीडेंसी, जे.के. रोड, राज होम्स कॉलोनी, भोपाल से प्रकाशित। संपादक इन्द्रजीत मौर्य।

खेल पत्रिका में प्रकाशित लेखों की जिम्मेदारी लेखक की है। प्रकाशक एवं संपादक का लेखक से सहमत होना अनिवार्य नहीं है। (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल न्यायालय रहेगा।

17 महिला प्रीमियर लीग

स्मृति की कप्तानी में रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर बनी पहली बार चैंपियन

अंदर के पन्नों पर

कार्टून का पन्ना	12
आईपीएल कार्यक्रम	13
अब बल्ले से जवाब देने का समय	14
आईपीएल रिकार्ड 2023	15
विदेशी गेंदबाजों को मिली कड़ी टक्कर	20
टेस्ट में उभरते ध्रुव जुरेल	22
रिकार्ड 42वें बार मुंबई ने जीता खिताब	25
टेस्ट में भारत फिर टाप पर	31
हॉकी टीम में सुधार पर फोकस	33
एक नजर	24
शटल की उड़ान	37
संतोष ट्रॉफी फुटबाल / राउंड अप	39 से 41

छपते-छपते

हार्दिक और सलीमा को मिला सर्वश्रेष्ठ हॉकी अवॉर्ड

विवेक सागर, नीलकांता शर्मा सहित युवा खिलाड़ियों को भी मिला सम्मान

भारतीय पुरुष हॉकी टीम के उपकप्तान और मिडफील्डर हार्दिक सिंह ने हॉकी इंडिया अवॉर्ड्स में पुरस्कारों की झड़ी लगा दी। इस कड़ी में उन्होंने पीआर श्रीजेश, हरमनप्रीत सिंह और मनप्रीत सिंह जैसे कई खिलाड़ियों को पीछे छोड़ा। हार्दिक ने साल 2023 के लिए भारत के सर्वश्रेष्ठ पुरुष हॉकी खिलाड़ी का पुरस्कार जीता। महिलाओं की श्रेणी में साल के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का अवॉर्ड सलीमा टेटे ने जीता। हार्दिक और सलीम को बलबीर सिंह सीनियर पुरस्कार दिया गया। साथ ही 25-25 लाख रुपये भी दिए गए। इतना ही नहीं, हार्दिक ने साल (2023) के सर्वश्रेष्ठ मिडफील्डर होने के लिए अजीत पाल सिंह अवॉर्ड भी जीता। उन्हें इनाम के तौर पर पांच लाख रुपये भी मिले।

हरमनप्रीत सिंह सर्वश्रेष्ठ डिफेंडर चुने गए : भारतीय हॉकी टीम के कप्तान हरममप्रीत सिंह सर्वश्रेष्ठ डिफेंडर चुने गए और उन्हें परगट सिंह अवॉर्ड से समानित किया गया। उन्हें भी इनाम के तौर पर पांच लाख रुपये दिए गए। वहीं, भारत के दिग्गज गोलकीपर पीआर श्रीजेश को साल का सर्वश्रेष्ठ गोलकीपर चुना गया। उन्हें बलजीत सिंह गोलकीपर ऑफ द ईयर अवॉर्ड से समानित किया गया। श्रीजेश ने इस मामले में भारतीय महिला हॉकी टीम की कप्तान सविता पूनिया को पीछे छोड़ा।

अभिषेक सर्वश्रेष्ठ फॉरवर्ड खिलाड़ी : बेस्ट फॉरवर्ड खिलाड़ी के लिए धनराज पिल्लै अवॉर्ड युवा स्ट्राइकर अभिषेक ने जीता। वर्ष के सर्वश्रेष्ठ उभरते सितारे (पुरुष) के लिए जुगराज सिंह पुरस्कार अरायजीत सिंह हुंडल ने जीता। वहीं, वर्ष के सर्वश्रेष्ठ उभरते सितारे (महिला) के लिए असुंता लाकड़ा पुरस्कार दीपिका सोरेंग को मिला। ये अंडर-21 हॉकी खिलाड़ियों के लिए हैं। दोनों विजेता खिलाड़ियों को इनाम के तौर पर 10-10 लाख रुपये मिले।

अशोक कुमार को ध्यानचंद पुरस्कार : इस समारोह में शीर्ष पुरस्कार हॉकी इंडिया मेजर ध्यानचंद लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड का रहा, जिसे उनके (ध्यानचंद) बेटे अशोक कुमार ने जीता। अशोक को 30 लाख रुपये से समानित किया गया। इस साल के लिए कुल इनामी राशि 7.56 करोड़ रुपये की थी।

विवेक सहित कई युवाओं को मिला अवार्ड: समारोह की शुरुआत माइलस्टोन अवार्ड्स 2023 से हुई, जिसमें विवेक सागर प्रसाद, हार्दिक, नीलकंठ शर्मा, सुमित, कृष्ण बहादुर पाठक, उदिता, सलीमा और गुरजंत सिंह ने 100 अंतरराष्ट्रीय कैप पूरे करने के लिए एक लाख रुपये का नकद पुरस्कार और एक ट्रॉफी जीती। निक्की प्रधान, अमित रोहिदास, ललित कुमार उपाध्याय और नेहा को भी 150 अंतरराष्ट्रीय कैप पूरे करने के लिए 1.5 लाख रुपये और एक ट्रॉफी प्रदान की गई।

हार्दिक और सलीमा टेटे।

विवेक सागर

मेरी बात...

इन्द्रजीत मौर्य
प्रधान संपादक

खिलाड़ियों के लिए बड़ी खुशखबरी

लंबे समय बाद सरकार ने खेलो इंडिया के विभिन्न खेल आयोजनों में पदक जीतने वाले युवा खिलाड़ियों के लिए बड़ी खुशखबरी दी है। अब सरकारी नौकरियों में खेल कोटे के जरिए होने वाली भर्तियों में खेलो इंडिया के पदक विजेताओं को वरीयता मिलेगी। अब तक अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय स्तर पर पदक जीतने वाले खिलाडियों को सरकारी नौकरी में वरीयता दी जाती थी, लेकिन केंद्र सरकार की ओर से पिछले दिनों जारी आदेश में खिलाड़ियों की भर्ती, प्रोन्नति के दिशा-निर्देशों में संशोधन कर इनमें खेलो इंडिया के पदक विजेताओं को भी शामिल कर लिया गया।

सरकार के आदेश के तहत खेलो इंडिया यूथ गेम्स, यूनिवर्सिटी गेम्स, विंटर गेम्स और पैरा गेम्स में पदक जीतने वाले खिलाड़ियों को खेल कोटे के तहत लगने वाली सरकारी नौकरी में वरीयता दी जाएगी। यह आदेश डीओपीटी की ओर से जारी किया गया है। उसने तीन अक्टूबर, 2013 को निकाले गए अपने आदेश में संशोधन किया है। संशोधित नियमों के तहत, खेलो इंडिया युवा खेलों (18 वर्ष और उससे अधिक आयु के प्रतिभागियों के लिए), खेलो इंडिया शीतकालीन खेलों, खेलो इंडिया पैरा खेलों और खेलो इंडिया विश्वविद्यालय खेलों जैसे आयोजनों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ी अब सरकारी रोजगार के अवसरों के पात्र होंगे।

खेलो इंडिया के पदक विजेताओं को सरकारी नौकरी में नंबर चार के क्रम पर वरीयता दी जाएगी। पहली वरीयता देश के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधत्व करने वाले, दूसरी वरीयता सीनियर और जूनियर स्तर पर राष्ट्रीय खेल संघों से मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय चैंपियनशिप, आईओए से मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय खेल के पदक विजेताओं को दी जाएगी। तीसरी वरीयता ऑल इंडिया इंटर यूनिवर्सिटी के पदक विजेताओं और खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी के पदक विजेताओं को मिलेगी। चौथी वरीयता खेलो इंडिया यूथ गेम्स, विंटर गेम्स और पैरा गेम्स के पदक विजेताओं को मिलेगी। पांचवीं वरीयता राष्ट्रीय स्कूल खेलों के पदक विजेताओं को मिलेगी और छठी वरीयता राष्ट्रीय चैंपियनशिप, राष्ट्रीय खेल, इंटरयूनिवर्सिटी, खेलो इंडिया, स्कूल खेल में भाग लेने वालों को मिलेगी।

इसके अलावा भारतीय स्कूल खेल महासंघ में उपलब्धि हासिल करने वाले भी ऐसे पदों के लिए अपनी पात्रता बनाए रखेंगे। इसके मुताबिक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शतरंज प्रतियोगिताओं अच्छा प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ी भी सरकारी नौकरी के पात्र होंगे। जिन खिलाड़ियों ने अंतरराष्ट्रीय या राष्ट्रीय आयोजनों में देश या राज्य का प्रतिनिधित्व किया है, या जूनियर राष्ट्रीय टूर्नामेंट में बेहतरीन प्रदर्शन किया है वे भी रोजगार के लिए पात्र होंगे। इस मामले में उम्मीदवारों को प्राथमिकता देने के लिए खेल उपलब्धियों पर आधारित तैयार किया गया पदानुक्रम का पालन किया जाएगा। सरकार ने बड़े समय बाद खिलाड़ियों के लिए बड़ी खेल खुशखबरी दी है। इसलिए अब युवा खिलाड़ियों उम्मीद की जाती है कि वे अपने खेल में और निखार लाएंगे। पदक जीतेंगे।

विशेष

वूशु में कश्मीरी बहनों आयरा और अंसा का कमाल

श्रीनगर की आयरा और अंसा चिश्ती जुड़वां बहनें हैं। दोनों की पसंद और नापसंद भी एकसमान है और अब दोनों ने एक साथ मास्को स्टार वूशु टूर्नामेंट में स्वर्ण पदक भी जीता। आयरा को एक नजर में मार्शल आर्ट वूशु पसंद आया तो अंसा ने भी थोड़ी हिचकिचाहट के बाद इसे अपना लिया। पिता इलेक्ट्रिकल इंजीनियर और मां मेडिकल कॉलेज में फिजियोलॉजी की प्रोफेसर हैं। दोनों ने जब वूशु को अपनाया तो माता-पिता को ताने सुनने पड़े। कहा गया, लड़कियां हैं, इन्हें नहीं खेलना चाहिए, चोट लग गई तो चेहरा खराब हो जाएगा, इनसे शादी कौन करेगा, लेकिन माता-पिता ने किसी की नहीं सुनीं। वही बेटियां कश्मीर की पहली ऐसी जुड़वां बहनें बनी हैं, जिन्होंने एक साथ किसी अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में स्वर्ण जीते। आयरा तो जूनियर विश्व चैंपियनशिप में पदक जीतने वाली पहली कश्मीरी बेटी भी हैं।

स्वर्ण और बोर्ड परीक्षा की एक साथ तैयारी : आयरा अमर उजाला को बताती हैं कि उनके माता-पिता ने उन्हें वूशु में इसलिए आगे बढ़ाया, क्यों कि वे चाहते हैं कि हम दोनों कुछ अलग करें। आयरा और अंसा ने मास्को में 52 और 56 भार वर्ग में स्वर्ण जीता। दोनों बुधवार को भारत लौटी हैं और अब अगली परीक्षा की तैयारी में जुट गई हैं। दोनों के पास बायोलॉजी है और उनकी बोर्ड की परीक्षा भी थी। आयरा बताती हैं कि मास्को में वह दो-दो परीक्षाओं के दौर से गुजर रही थीं। एक ओर वह स्वर्ण पदक की लड़ाई लड़ रही थीं तो खाली समय में यूट्यूब और ऑनलाइन क्लास के जरिए परीक्षाओं की भी तैयारियां कर रहीं थीं।

आयरा के वूशु से जुड़ने की कहानी भी दिलचस्प है। वह बताती हैं कि उन्हें मार्शल आर्ट्स की फिल्में देखना पसंद है। एक दिन वह स्टेडियम गईं, जहां खेलो इंडिया के ट्रायल चल रहे थे। इस दौरान एक लड़के के चेहरे पर चोट लग गई और उसके खून बहने लगा। उन्होंने उसी वक्त प्रण लिया कि वह इस खेल को अपनाएंगी। हालांकि अंसा शुरुआत में थोड़ा हिचकिचाईं, लेकिन बहन को देखकर उन्होंने वूशु खेलना शुरू कर दिया। 18 वर्षीय आयरा ने 2022 की जूनियर विश्व चैंपियनशिप में कांस्य पदक जीता। वह विश्व चैंपियनशिप में पदक जीतने वाली पहली कश्मीरी महिला एथलीट बनीं। आयरा और अंसा का सपना है कि दोनों एक साथ 2026 के एशियाई खेलों में प्रतिनिधत्व करें और वहां देश के लिए स्वर्ण पदक जीतें।

टीम इंडिया के लिए ऋषभ पंत की वापसी का इंतजार है जो किसी भी प्रेरणा देने वाली स्टोरी से कम न होगी

आईपीएल 2024 में यूं तो बहुत कुछ हो रहा है पर सबसे बड़ी स्टोरी है ऋषभ पंत की क्रिकेट में वापसी। न सिर्फ खेल रहे हैं- कप्तान भी हैं दिल्ली कैपिटल्स के। अपने आखिरी क्रिकेट मैच के 453 दिन के बाद, ये वापसी हुई। वे लौटे हैं तो ऋषभ पंत की हिम्मत तो है ही इसे संभव बनाने में पर साथ में अच्छा भाग्य और कई मदद का योगदान है। आईपीएल से भी ज्यादा, अब टीम इंडिया में वापसी का इंतजार हो रहा है- ये है टीम में किसी भी क्रिकेटर की जरूरत की पहचान।

भले ही उनका आईपीएल में वापस लौटना रिकॉर्ड के करीब भी नहीं (रिकॉर्ड : छत्तीसगढ़ के हरप्रीत सिंह भाटिया जो 2010- कोलकाता नाइट राइडर्स और 2011/12- पुणे वॉरियर्स के लिए खेलने के बाद 2023- पंजाब किंग्स के लिए खेले) पर हिम्मत में आईपीएल की सबसे बड़ी स्टोरी में से एक है। एक जानलेवा सड़क एक्सीडेंट और इतनी बुरी तरह घायल कि कहा गया कि वे मौत के मुंह से वापस लौटे। तब भी, हर मेडिकल अनुमान से जल्दी फिट होकर, मोहाली में दिल्ली कैपिटल्स के लिए सीजन का पहला मैच खेला। ये जिंदगी और क्रिकेट में उनकी दूसरी पारी है और इसमें भी सफलता की कामना करें। इस नजरिए से, इस पहले मैच या आईपीएल में कितने रन बनाए- इसका कोई महत्व नहीं। न सिर्फ, बिना दिक्कत बैटिंग की, विकेटकीपिंग भी की।

दिसंबर 2022 की वह रात, कोई भी भूलेगा नहीं- ऋषभ पंत का रूड़की के पास कार एक्सीडेंट हुआ। दाहिना घुटना बिलकुल मुड़ गया, मसल्स फट गईं और शरीर से बाहर लटक रही थीं तथा पीठ के आसपास हड्डियों से मांस तक गायब था। कुचली कार की हालत देखकर कोई नहीं कह सकता था कि कोई बचा होगा। ईश्वर बहरहाल उनके साथ थे और लगभग 14 महीने बाद आईपीएल में वापसी की। क्रिकेट में वापसी की कई प्रेरणा देने वाली स्टोरी हैं। ये किसी खिलाड़ी के ख़राब फिटनेस के बाद क्रिकेट में लौटने की स्टोरी नहीं है- भारतीय क्रिकेट को देखें तो शायद युवराज सिंह की कैंसर से वापसी के बाद से ये सबसे हिम्मत वाली वापसी की स्टोरी है।

चरनपाल सिंह सोबती
खेल समीक्षक

देहरादून के एक हॉस्पिटल में जान बचाई, बेहतर इलाज के लिए वहां से दिल्ली ट्रांसफर किया और उसके बाद मुंबई के कोकिलाबेन हॉस्पिटल में स्पोर्ट्स मेडिसिन के लिए ले गए। ऋषभ के घुटने की सर्जरी करने वाले डॉ. दिनशॉ पारदीवाला ने कहा था- ये लंबा इलाज है और दो साल भी लग सकते हैं। अपने पैरों पर खड़े हुए तो क्रिकेट के लिए फिट करने का काम बंगलुरु में नेशनल क्रिकेट एकेडमी (एनसीए) में फिजियो ने किया और उम्मीद से पहले उनकी वापसी को संभव बना दिया। फिजियो तुलसी युवराज ने लिखा- ये उनके अंदर की दिमागी हिम्मत और आत्मविश्वास का नतीजा है कि रिहैबिलिटेशन में सब बहुत तेजी से और सही होता गया। एनसीए ने फिटनेस देखने के लिए सिमुलेशन और अलूर में 20 ओवर के प्रदर्शनी मैच में खेलने पर नजर रखी और आज स्थिति ये है कि जून में टी20 विश्व कप में खेलने के दावेदार हैं।

सही समय पर मदद देने वाले भी मिले। सबसे पहले तो रजत कुमार और निशु कुमार जिन्होंने उस कुचली कार से उन्हें बाहर निकाला जिसे देखकर कोई न कहेगा कि इसके अंदर कोई बचा होगा और हॉस्पिटल पहुंचाया। उत्तराखंड के एक एमएलए

उमेश ने अपनी पहुंच का इस्तेमाल किया इलाज में तेजी के लिए और बीसीसीआई ने पहले दिन से इलाज में खर्चे में पूरी मदद की। 23 मार्च को जब वह मोहाली में पंजाब किंग्स के विरुद्ध खेले तो इन सभी को भी बराबर खुशी हुई होगी। ऋषभ ने एक्सीडेंट के कई दिन बाद कहा था- पहली बार मुझे ऐसा लगा जैसे इस दुनिया में मेरा टाइम खत्म हो गया है। एनसीए में स्ट्रेंथ और कंडीशनिंग कोच निशांत बोरदोलोई कहते हैं- ऋषभ की अपनी जिमनास्टिक की बैक ग्राउंड ने बड़ी मदद की।

एक जानलेवा सड़क एक्सीडेंट और इतनी बुरी तरह घायल कि कहा गया कि वे मौत के मुंह से वापस लौटे। तब भी, हर मेडिकल अनुमान से जल्दी फिट होकर, मोहाली में दिल्ली कैपिटल्स के लिए सीजन का पहला मैच खेला। ये जिंदगी और क्रिकेट में ऋषभ पंत की दूसरी पारी है और इसमें भी सफलता की कामना करें।

ख़राब फिटनेस के बाद ऑलराउंडर हार्दिक पांड्या भी क्रिकेट में लौटते हैं पर उनके या सचिन तेंडुलकर, जहीर खान, आशीष नेहरा और अनिल कुंबले जैसों के क्रिकेट में लौटने और ऋषभ के लौटने में बड़ा फर्क है। कैंसर को मात दी युवराज सिंह ने और टीम इंडिया की जर्सी फिर से पहनी। चोट से जूझने के बाद अपने करियर में चैंपियन बनकर लौटने की भारत में मिसाल देखनी है तो मंसूर अली खान पटौदी भी हैं। 20 साल की उम्र में कार एक्सीडेंट जिसमें जान तो बच गई पर दाहिनी आंख खो दी। वह कांच की आंख लगाकर क्रिकेट में लौटे और भारत की कप्तानी की- 46 टेस्ट जिसमें 34.91 औसत से 6 शतक की मदद से 2793 रन बनाए और भारत के सबसे बेहतरीन क्रिकेटर में से एक गिनते हैं उन्हें।

हर इंटरनेशनल क्रिकेटर चाहता है कि उसका करियर बिना चोट, लंबा चले। कुछ क्रिकेटर इस मामले में भाग्यशाली नहीं रहे और बड़ी चोट से न सिर्फ खेलना रुका, बल्कि ख़त्म भी हो गया। वे इंटरनेशनल क्रिकेट में वापसी नहीं कर सके। कुछ ने वापसी की पर प्रदर्शन पहले जैसा नहीं रहा। क्रिकेट में लगी चोट एक अलग बात है पर यहां एक्सीडेंट/दुर्घटना को देख रहे हैं। उम्मीद करें इस लिस्ट में ऋषभ पंत का नाम नहीं होगा।

पिछले साल के विश्व कप के अपने पहले 10 मैच में प्रभावशाली जीत दर्ज करने के बावजूद फाइनल के दिन टीम इंडिया उस ऑस्ट्रेलिया से कैसे हार गई जो एक वक्त सेमीफाइनल खेलने के लिए भी जूझ रही थी? इसके लिए जानकारों की नजर में वजह कई हैं और इनमें से एक ये कि कि भारत ने एक ख़ास खिलाड़ी की कमी को महसूस किया- वे टीम में नहीं थे अपनी ख़राब फिटनेस के कारण। अगर फिट होते तो ये तय है कि विश्व कप के मैचों में भारत की प्लेइंग इलेवन की शक्ल ही कुछ और होती। ये और कोई नहीं ऋषभ पंत हैं।

बेंगलुरु में एक मैच की सुबह वे पवेलियन में थे- लेकिन वहां से किसी टीम के ड्रेसिंग रूम में नहीं, उस रास्ते पर गए जो उन्हें सीधे नेशनल क्रिकेट एकेडमी के रिहेबिलिटेशन सेंटर में ले गया। वे टीम इंडिया के कोलकाता में दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध मैच के दौरान टीम होटल में देखे गए लेकिन टीम इंडिया के खिलाड़ी के तौर पर नहीं, दिल्ली कैपिटल्स टीम के साथ जो वहां प्री सीजन ट्रेनिंग कैंप में हिस्सा ले रही थी।

ये सिर्फ भारत के क्रिकेट पंडितों की सोच नहीं है. पुराने दिग्गज भी ये मानते हैं कि टीम इंडिया में जो भी मध्य क्रम की कमजोर कड़ी रही- अगर टीम में ऋषभ होते तो दूर हो जाती। सच्चाई तो ये है कि ये विश्व कप, ऋषभ के क्रिकेट करियर में उस मुकाम पर खेला गया जो उनके करियर को नई ऊंचाई पर ले जाता। इसके उलट ऋषभ पंत, विश्व कप की तैयारी के दिनों में, उस जान लेवा दुर्घटना के बाद की फिटनेस से जूझ रहे थे जिसने हाल-फिलहाल तो उनके उनके क्रिकेट करियर

को ही रोक दिया है। विश्व कप में अहमदाबाद में जो हुआ उसके बाद टीम इंडिया को बड़ी बेसब्री से फिट ऋषभ पंत का इंतजार होने लगा था और अब वह संभव नजर आ रहा है।

ऋषभ पंत तब भारत के सबसे चहेते क्रिकेटरों में से एक थे और उन कुछ खिलाड़ियों में से एक जो तीनों फॉर्मेट की टीम में नियमित खेलने के दावेदार थे। विश्व कप उनके करियर का टॉप मुकाम होना चाहिए था। इस करिश्माई, तेज तर्रार विकेटकीपर-बल्लेबाज में भारत ने एमएस धोनी का सबसे सही सब्स्टीट्यूट देखा।

प्रोफेशनल क्रिकेट में अपनी वापसी की दिशा में वे एक के बाद एक छोटा कदम उठाते रहे। जब विश्व कप से कुछ दिन पहले पूर्व भारतीय विकेटकीपर किरण मोरे उनसे मिले थे तो पंत ने उनसे कहा था- सर, मैं बस वापस आना चाहता हूं और अपने खेल का फिर से मजा लेना चाहता हूं। ठीक है पंत को ये महीने कभी वापस नहीं मिलेंगे लेकिन, तसल्ली ये कि अभी भी उम्र उनके साथ है और अब चुनौती है उस दुर्घटना से पहले की फार्म वापस हासिल करना। ये तो लगभग तय है कि 2023 विश्व कप में भारत की जो टीम खेली उसकी शक्ल बहुत जल्दी बदलेगी। जो सीनियर 2023 टीम की जान थे उनमें से ज्यादातर अगले विश्व कप तक टीम के साथ नहीं होंगे और शुभमन गिल (24), श्रेयस अय्यर (28) और पंत (26) जैसे खिलाड़ियों को सीनियर बनकर मोर्चा संभालना है। 2024 का टी20 विश्व कप ज्यादा दूर नहीं है- इस समय सेलेक्टर्स की नजर सीधे पंत की फिटनेस की तरफ है। इंतजार है उस दिन का जब फिट ऋषभ पंत फिर से टीम इंडिया में एक जगह के दावेदार होंगे। जो कमी इस विश्व कप में रही- आगे न रहे।